eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा नीति का सामाजिक न्याय पर प्रभाव

पूजा[1] एवं डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधकत्री, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 20 July 2025, Accepted: 25 July 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2025

Abstract

पंडित गोविंद बल्लभ पंत भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के एक महान सेनानी ही नहीं बल्कि एक दूरदर्शी शिक्षाविद और समाज सुधारक भी थे उनकी शिक्षा नीति केवल ज्ञान की प्रचार तक सीमित नहीं थी बल्कि इसमें सामाजिक समर्थक आसमानता न्याय की भावना गहराई से अनन्य निहित थी पंत जी मानते थे की शिक्षा समाज में परिवर्तन सबसे शक्तिशाली साधन है उन्होंने शिक्षा केवल आवाज इधर के लिए सीमित न रखकर उसे समाज के प्रतिकार तक पहुंचाने का प्रयास किया विशेष पिछले वंचित दलित समुदाय के नियम के अनुसार शिक्षा माध्यम से ही समाज व्याप्त असमानता और भेदभाव को दूर किया जा सकता है उनकी नीतियों में समानशैक्षिक अवसर निश्चल और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा और भाषाओं तथा संस्कृत विविधता का सम्मान जैसे पहलू भी शामिल थे पंत जी यह भले बातें समझते थे कि जब तक समाज के सभी वर्गों का समान शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक सामाजिक न्याय केवल एक आदर्श बना रहेगा। उन्होंने अपनी प्रशासनिक केवल में उत्तर प्रदेश में हिंदी भाषा को सरकारी कामकाज की भाषा बनाकर भाषा ही न्याय की स्थापना की उनके द्वारा लागू की गई शिक्षा योजना में लैंगिक समानता और सामाजिक समय समावेशिका को भी प्राथमिकता दी। पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा नीति एक समावेशी दृष्टिकोण पर आधारित थी जिसका लक्ष्य एक नया पूर्ण सामान सम्राट समाज का निर्माण उन्होंने शिक्षक को सामाजिक न्याय का मूल आधार बनाया और यह सुनिश्चित किया कि समाज के सबसे कमजोर वर्ग को भी अधिकार का ऑप्शन मिले जो उन्होंने गरिमा पूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक है आज भी उनकी शिक्षा संबंधी सूचना अधिनियम भारत में सामाजिक न्याय की नीवं मानी जाती है।

मुख्य शब्द– पंडित गोविंद बल्लभ पंत, शिक्षा नीति, सामाजिक न्याय, उत्तर प्रदेश में शिक्षा सुधार, समान अवसर, निर्धन एवं वंचित वर्गों की शिक्षा, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और शिक्षा, सामाजिक समरसता, प्रगतिशील शिक्षा दृष्टिकोण, शिक्षा में समावेशिता

Introduction

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के यशस्वी सेनानी कुशल प्रशासन को सामाजिक सुधारक पंडित गोविंद बल्लभ पंत के कैसे विचारक थे जिन्होंने शिक्षा को केवल साक्षरता का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक बदलाव न्यायाधीश के रूप में देखा उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल वृद्धि का विकास नहीं बल्कि समाज में व्यक्ति विषमता भेदभाव और अन्य को समाप्त करना होना चाहिए। भारत की स्वतंत्रता के उपरांत जिन नेताओं ने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनमें पंडित गोविंद बल्लभ पंत का नाम अग्रणी रूप से लिया जाता है। वे न केवल स्वतंत्रता संग्राम के एक समर्पित सेनानी थे, बल्कि एक कुशल प्रशासक, संवैधानिक दृष्टा और समाज सुधारक भी थे।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री और स्वतंत्र भारत के गृहमंत्री के रूप में उन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में अनेक ऐतिहासिक कदम उठाए। पंडित पंत यह भलीभाँति समझते थे कि एक समावेशी, सशक्त और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उनकी शिक्षा नीति इस विचारधारा पर आधारित थी कि जब तक समाज के वंचित, पिछड़े और शोषित वर्गों को शिक्षा का समान अवसर नहीं मिलेगा, तब तक सामाजिक न्याय और समानता का लक्ष्य अधूरा रहेगा। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकीकरण, मातृभाषा में शिक्षा, स्त्री शिक्षा के प्रसार तथा पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षित शिक्षण संसाधनों की पैरवी की। पंत जी की शिक्षा नीति महज़ शैक्षिक विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसका व्यापक उद्देश्य सामाजिक ढांचे में संतुलन स्थापित करना था। उन्होंने सामाजिक असमानताओं को मिटाने और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए शिक्षा को परिवर्तन के साधन के रूप में देखा। उनकी नीतियों ने न केवल शैक्षिक ढांचे को जनोन्मुखी बनाया, बल्कि सामाजिक न्याय की दिशा में ठोस नींव भी रखी।

इस शोध में हम पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा नीति के सामाजिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि उनकी दूरदर्शी सोच ने किस प्रकार भारतीय समाज में समानता, अवसर और न्याय की भावना को सशक्त किया।

शोध का उद्देश्य– पंडित गोभी बल्लभ पंत की शिक्षा नीति विश्लेषण करना है विशेष रूप से यह समझना कि उनकी नीतियां सामाजिक न्याय को कैसे प्रभावित करती हैं इसमें हम उनके शिक्षा संबंधित दृष्टिकोण लागू की गई नीतियों सामाजिक रूपांतरण में उनकी भूमिका तथा आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालेंगे उनकी मृत्यु में स्पष्ट था कि जब तक समाज के अंतर्गत व्यक्ति शिक्षा नहीं मिली तब तक समाज न्याय संगत नहीं कहा जा सकता उन्होंने निशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा भाषा ही समर्थ महिला शिक्षा और शैक्षिक संस्थानों को विकेंद्रीकरण जैसे कई कदम उठाए जिनका सीधा प्रभाव भारत के सामाजिकन्याय स्थापना पर दलित और पिछले शैक्षिक अफसर में प्राथमिकता लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा ग्रामीण क्षेत्र विद्यालय की स्थापना मातृभाषा में शिक्षा से आत्मविश्वास की वृद्धि विद्यालय विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास दलितो और पिछडो को शैक्षिक अवसरो में प्राथमिकता।

- लडकियो की शिक्षा को बढावा।
- ग्प्रमीण क्षेत्रो में विद्याल्यो की स्थापना।
- मातृभाषा में शिक्षा से आत्मविश्वास की वृद्वि।
- विद्यार्थियो में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास।

शिक्षा की नीति के मूल के सिद्धांत–

1– पंत जी की शिक्षा नीति के सिद्धांतों पर आधारित थी। सारस्वत शिक्षा यूनिवर्सल एक्सेस टू एजुकेशन उनका मानना था कि हर नागरिक को चाहे वह किसी भी वर्ग के जाति से वह शिक्षा समान अधिकार होना चाहिए।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

2– मूल्य आधारित शिक्षा – शिक्षक का भाव में शामिल करने की आवश्यकता पंडित जी बार–बार जाहिर करते थे।

3– **भाषा और संस्कृत का संरक्षण**– उन्होंने हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाकर भाषा ही न्याय और संस्कृति अस्मिता मजबूत किया

4– उत्तर प्रदेश में शिक्षा सुधारने की स्थापना– पंत जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में व्यापक स्तर पर शिक्षा संबंधी सुधार हुए

- विद्यालय की संख्या वृद्धि
- प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य और निशुल्क
- शिक्षकों की नियुक्ति में निष्पक्षता
- दलित्व आदिवासी समुदाय को विशेष सहायता योजनाएं

पंत जी की शिक्षा नीति उसका सामाजिक न्याय का प्रभाव–

1. दलित और पिछले वर्गों को शिक्षा में स्थान पंडित जी की नीतियों ने समाज के वंचित वर्ग को मुख्य धारा में लाने का कार्य किया
2. शिक्षा में लैंगिक समानता उन्होंने बालिकाओं को शिक्षा बढ़ावा देने हेतु का योजना शुरू की
3. शिक्षा में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग से ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा पहुंची और बड़ी संस्कृत आत्म सम्मान का विकास हुआ
4. शहरी ग्रामीण और शिक्षा में संतुलन पंत जी का लक्ष्य शिक्षा केवल एक शायरी अभिजात वर्ग सीमित न रखकर हर गांव तक पहुंचाना था।

निष्कर्ष– पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा नीति भारत के सामाजिक ढांचे की मूलक और न्याय संगत बनाने की दिशा में मिल का पत्थर सिद्ध हुई उनके विचार आज भी शिक्षा सामाजिक न्याय के परीक्षा में अत्यंत प्रासंगिक हैं। पंडित गोविंद बल्लभ पंत श्री शिक्षा नीति समाज की आवश्यकता माध्यम से प्रयास थी उन्होंने अपना केवल शिक्षा को सुलभ बनाने प्रयास किया बल्कि का सामाजिक न्याय एवं सिद्धांत को स्थापित राज्य भारत के सामाजिक समझौता अफसर को विषमता जूझ रहा है जब पंत जी की शिक्षा नीति हमें एक समाज तूलक नया शंकर समाज के शिक्षा मार्गदर्शन कर देती है। पंडित पंत के सामाजिक न्याय का मूल आधार था समान अवसर समावेशित और गरिमा में मानते थे कि समाज में व्याप्त विषमता जातिगत भेदभाव आर्थिक असमानता को केवल शिक्षा के माध्यम से मिटाया जा सकता है।पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा नीति का विश्लेषण यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और न्याय का सशक्त माध्यम मानते थे। स्वतंत्र भारत के आरंभिक वर्षों में जब देश जातिगत भेदभाव, वर्गीय विषमता और लैंगिक असमानता जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा था, उस समय पंत जी की शिक्षा संबंधी नीतियों ने समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का मार्ग प्रशस्त किया।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा, सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा, महिला शिक्षा के विस्तार और पिछड़े वर्गों के लिए विशेष शैक्षणिक योजनाओं पर बल दिया, जिससे समाज में शिक्षा की पहुँच व्यापक हुई। उनकी सोच में यह स्पष्ट था कि जब तक हर वर्ग को समान शैक्षणिक अवसर नहीं मिलेगा, तब तक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत नहीं हो सकतीं और न ही सामाजिक न्याय की संकल्पना पूर्ण हो सकती है।

पंत जी की शिक्षा नीति ने न केवल शैक्षिक सुधार को गति दी, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव रखी जो समतावादी, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील हो। उनकी नीतियाँ आज भी शिक्षा को सामाजिक न्याय से जोड़ने वाले नीति निर्धारकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। वर्तमान समय में जब शिक्षा पुनः असमानता के संकट से जूझ रही है, तब पंत जी की सोच और नीतियाँ एक प्रासंगिक और दिशानिर्देशक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

इस प्रकार, पंडित गोविंद बल्लभ पंत की शिक्षा नीति ने भारतीय समाज में सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करने में निर्णायक भूमिका निभाई और भारत को एक समरस, सशक्त तथा शिक्षित राष्ट्र बनाने की दिशा में एक ठोस कदम सिद्ध हुई।

संदर्भ सूची

1. **पंडित गोविंद बल्लभ पंत** एक जीवनी लेखक बद्री दत्त पांडे जीवन परिचय शिक्षा दर्शन सामाजिक दृष्टिकोण विस्तृत विवरण
2. **भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं दर्शन** लेखक विनय शर्मा शिक्षा में सामाजिक न्याय की अवधारणा का ऐतिहासिक विकास का वर्णन।
3. **शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन लेखक** डॉ राम शंकर अवस्थी शिक्षक को सामाजिक समानता के उपकरणों के रूप में प्रस्तुत करता है
4. **आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय** लेकर भीमराव शास्त्री सामाजिक न्याय अवधारणा एवं भारतीय परिपेक्ष में उसका मूल्यांकन
5. **भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय** लेखक डॉक्टर एमएल शर्मा शिक्षा में समानता अधिकार न्याय संवैधानिक प्रावधानों का अध्ययन
6. **उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार State Archive** शिक्षा विभाग पंतजी के कार्यकाल में लागू शैक्षिक योजना के प्राथमिक स्रोत।